



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 143]

No. 143]

नई दिल्ली, मंगलवार, जून 10, 2003/ज्येष्ठ 20, 1925

NEW DELHI, TUESDAY, JUNE 10, 2003/JYAISTHA 20, 1925

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

पाटनरोधी तथा सम्बद्ध शुल्क महानिदेशालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 9 जून, 2003

विषय :—चीन जनवादी गणराज्य से फ्यूज्ड मैग्नेशिया के आयात के बारे में पाटनरोधी जांच (मध्यावधि समीक्षा)—अंतिम निष्कर्ष।

संख्या 18/1/1997-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटन शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियम, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

क. प्रक्रिया

2. जांच परिणामों के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे एतद पश्चात प्राधिकारी भी कहा गया है) को दिनांक 2 फरवरी 1999 के अधिसूचना संख्या 18/1/97-एडीडी के अनुसार जनवादी गणराज्य चीन के मूल अथवा वहां से निर्यातित (जिन्हें सम्बद्ध देश कहा गया है) अथवा वहां से आयातित फ्यूज्ड मैग्नेशिया (जिसे बाद में सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं।

(ii) सीमा शुल्क टेरिफ अधिनियम 1995 और नियम के अनुसार प्राधिकारी के लिए अपेक्षित होता है कि केन्द्रीय सरकार द्वारा लगाये गये पाटन रोधी शुल्क को बनाये रखने की आवश्यकता की समय समय पर समीक्षा करें।

(iii) माननीय उच्चतम न्यायालय ने 2000 की सिविल अपील संख्या 4936-4937 में अपने दिनांक 5.3.2000 के आदेश द्वारा प्राधिकारी को निदेश दिया है कि वह अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित का आंकलन करें -

क. क्या बिरला पैरीक्लेज की फैक्ट्री फ्यूज्ड मैग्नेशिया के चीन के निर्यातकों द्वारा किये गये पाटन के परिणामस्वरूप बंद हुई थी अथवा नहीं और क्या यह फैक्ट्री जांच के बाद या इसके पहले बंद हुई थी।

ख. क्या मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में पाटनरोधी शुल्क औचित्यपूर्ण बताया गया है।

ग. माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश की प्राप्ति के तीन महीनों के भीतर समीक्षा को पूरा करना।

(iv) अधिसूचना से प्राप्त अंतिम निष्कर्ष का संक्षिप्त सार को सुलभ संदर्भ के लिये नीचे प्रस्तुत किया गया है -

(क) सीईजीएटी के लिये पाटनरोधी शुल्क की बढ़ोतरी करने से पहले मैसर्स बिरला पैरीक्लेज ने 3 मई 1999 को अपील दायर की।

(ख) मैसर्स रिफैक्ट्री मेकरर्स एसो0 ने समान प्रकार की वस्तु के बारे में सीईजीएटी के समक्ष एक अपील दायर की जिसमें विनती की गई कि सी-वाटर मैग्नेशिया उत्पाद (चीन से आयातित) का उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है।

(ग) सी.ई.जी.ए.टी. ने दिनांक 19-1-2000 को दोनों अपीलों पर निर्णय लिया और उन्होंने निर्दिष्ट प्राधिकारी के निष्कर्षों को उलट दिया।

- (घ) प्राधिकारी द्वारा माननीय उच्चतम न्यायालय में दिनांक 27-3-2003 को सीआईजीएटी के आदेश के विरोध में अपील दायर की ।
- (ङ) उच्चतम न्यायालय के कस्टम प्राधिकारी को वस्तुओं पर बिना पाटन रोधी शुल्क लगाये रिलीज और क्लीयर करने के संबंध में दिये गये निर्देश के विरोध में मैसर्स एसोसिएटेड सैरिमिक लिमि और मैसर्स एसो लिमि ने आवेदन दिया है ।
- (च) राजस्व विभाग ने माननीय उच्चतम न्यायालय को सीआईजीएटी को दिये गये आदेश पाटनरोधी शुल्क को वापस लेने के आदेश का पालन क्यों नहीं किया गया, के संबंध में एक आवेदन पत्र दिया है ।
- (छ) माननीय उच्चतम न्यायालय में 12 मई 2000 को अपील दायर की और अभी तक जमा किये गये शुल्क की वापसी के लिये रोक आदेश - स्टे लिया है ।
- (ज) बहुत से याचिकाकर्ताओं ने उड़ीसा और आन्ध्रप्रदेश के हाईकोर्ट में अपील की कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने केवल अभी तक जमा पाटनरोधी शुल्क की वापसी रोक आदेश लिये हैं ।
- (झ) माननीय उच्चतम न्यायालय ने विभिन्न आवेदनों का निपटान करके दिनांक 10-5-2001 को आदेश दिया कि लंबित अपीलों की सुनवाई पाटन रोधी शुल्क के संबंध में यथासंभव वस्तुओं पर राजस्व विभाग की संतुष्टि के लिये स्पष्ट बाण्ड भरा जाए । उन वस्तुओं के संबंध में जिनका आयात सीआईजीएटी के आदेश के बाद हुआ और पाटन रोधी शुल्क का भुगतान कर दिया गया हो और उसे उसी प्रकार चार सप्ताह के भीतर वस्तुओं के आयातकों के वापसी राशि दी जायेगी जिन्होंने वैसा ही बांड भरा हो ।
- (ट) माननीय उच्चतम न्यायालय के दिनांक 5-3-2003 के आदेश के विरोध में सीआईजीएटी ने अपील करने का निर्णय लिया ।
- (ठ) माननीय उच्चतम न्यायालय ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को निदेश दिये कि -

- (1) मैसर्स बिरला पैरिक्लेज फैक्टरी (जो कि सिन्टर्ड मैग्नेशिया का निर्माता है) के बंद होने की वास्तविक स्थितियों को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन करते हुए पाया कि फ्यूज मैग्नेशिया के निर्यातक चीन के कारण बंद नहीं हुई न ही इसके पूर्व जांच के परिणामस्वरूप बंद हुई है ।
- (2) तथ्यों को ध्यान में रखते हुए और मामलों की परिस्थितियों को देखते हुए पाटनरोधी शुल्क का जारी रखने न्यायोचित है । इस मामले के आधार को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क की उगाही की पुनः समीक्षा करें और यदि हों तो किस तिथि से ।
- (3) निर्दिष्ट प्राधिकारी के अंतिम निर्णयों के मामले को पूर्णतः ध्यान में रखते हुए दिनांक 2 फरवरी 1999 से किसी भी समय शुल्क वापस लिया जा सकता है ।
- (4) सभी हितबद्ध पार्टियों को सुनने और पूरी तरह समीक्षा करने के बाद तीन माह की अवधि में इस आदेश की प्राप्ति के बाद सभी पार्टियों को सहयोग करने का प्रावधान है यदि कोई पार्टी पेश नहीं होगी तो निर्दिष्ट प्राधिकारी उस पार्टी की अनुपस्थिति में आगामी कार्रवाई करेंगी ।
- (5) इस प्रकार लंबित समीक्षा में फ्यूज मैग्नेशिया के आयात को बनाये रखने की व्यवस्था का आधार यथाविधि रूप से बांड को जारी रखना है । इस अवस्था में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निर्णय लिया है कि पाटनरोधी शुल्क की उगाही किसी भी अवधि के लिये न्यायोचित है और बांड उन आयोजकों के लिये है जिन्होंने उसी प्रकार यथाविधि प्रस्तुत किया है । यदि कोई शुल्क जमा है तो उसका कानून के अनुसार की गई समीक्षा के परिणामस्वरूप पालन किया जाए ।
- (v) दिनांक 2-2-1999 की अधिसूचना संख्या 18/1/97 एडीडी- में प्राप्त निर्णयों की जांच समीक्षा के निर्देश दिये हैं । प्राधिकारी ने दिनांक 24-3-2003 की अधिसूचना संख्या 18/1/97 डीजीएडी में सीमा शुल्क टेरिफ (संशोधित) नियम 1950 और कस्टम टेरिफ(एकरूपता, मूल्यांकन और पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क को जमा करना और

क्षति के लिये निर्धारित करना) के अनुसार जनवादी गणराज्य चीन से फयूज्ड मैग्नेशिया पर लगाये गये पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की आवश्यकता पर जोर दिया।

- (vi) प्राधिकारी को दिनांक 24-3-2003 के अधिसूचना संख्या 18/1/97 में सम्बद्ध देश पर फयूज मैग्नेशिया पर पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा का आरंभ करें और हितबद्ध पार्टियों को निवेदन करेंगे कि मध्यावधि समीक्षा अधिसूचना के प्रकाशन के 30 दिनों तक अपने पक्षों को स्पष्ट करें।
- (vii) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को अपना पक्ष मौखिक रूप से 30 अप्रैल 2003 तक प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। सभी पार्टियों ने जो लिखित अपील की है कि उनके पक्ष को मौखिक रूप से प्रस्तुत करने की अनुमति दें।
- (viii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों को सभी गवाहों के अगोपनीय अनुवाद और विभिन्न हितबद्ध पार्टियों के तर्कों की सार्वजनिक फाइलों को देखने की व्यवस्था की है।
- (ix) इन निष्कर्षों के आचित्य के बारे में हितबद्ध पार्टियों ने तर्क प्रस्तुत किये हैं।
- (x) नियम 16 के अनुसार आवश्यक तथ्यों / आधार को ध्यान में रखते हुए दिये गये निर्णय को हितबद्ध पार्टियों की जानकारी के लिये प्रस्तुत किये हैं और इन निर्णयों को ध्यान में रखते हुए यथाविधि इसके लिये उसी प्रकार की टिप्पणी प्राप्त हो सके।
- (xi) जांच अवधि का समय 1-1-2001 से 31-12-2002 तक का है।

ख. तथाकथित घरेलू उद्योग, निर्यातकों, आयातकों उपयोगकर्ताओं संघों और अन्य हितबद्ध पक्षों की ओर से विचार और प्राधिकारी द्वारा जांच

3. इच्छुक पक्षों द्वारा उठाये गये तर्कों पर जांच की गई, विचार किया गया है, और जहां भी उचित समझा गया यहा नीचे दिये गये संगत पैराग्राफों में उनपर एक निश्चित तरीके से विचार किया गया। निम्नलिखित पार्टियों ने अपने निवेदन प्रस्तुत किये हैं -

- (i) मै0 इंडियन रिफ्रैक्ट्री मेकर एसो, कोलकाता और उनके वकील द्वारा
- (ii) मै0 टाटा रिफ्रैक्ट्री लिमि0, पो0आ0 बेलपाहर
- (iii) मै0 ओ0सी0एल0 इंडिया लिमि0, पो0आ0 राजगंगपुर
- (iv) मै0 एसोसिएटेड सेरामिक्स लिमि0, पो0आ0 चिरकुंडा
- (v) मै0 माईथन सेरामिक लिमि0, पो0आ0 चिरकुंडा
- (vi) मैसर्स भारत रिफ्रैक्ट्री लिमि0, बोकारो
- (vii) मैसर्स बिरला पैराक्लेज की ओर से वकील

उपरोक्त के अतिरिक्त मैसर्स लाएड स्टील इंड्री. लिमि0 और मैसर्स सर्वेश रिफ्रैक्ट्री प्राइवेट लिमि0 ने पत्र के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये ।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान प्रकार की वस्तु

4. मौजूदा जांच में विचाराधीन उत्पाद फ्यूज मैग्नीशिया है। फ्यूज मैग्नीशिया एक इस प्रकार मैग्नीशिया है जो मुख्यतया इत्पात उत्पादन में रिफ्रैक्ट्री सामग्री के रूप में प्रयुक्त होता है। मैग्नीशिया, प्राकृतिक स्रोतों (अर्थात् फ्यूज मैग्नीशिया) एवं सिन्थेटिक स्रोतों (सी-वाटर मैग्नीशिया) से प्राप्त होता है। इन दोनों स्रोतों में से किसी भी स्रोत से उपलब्ध मैग्नीशिया को सिन्टर्ड मैग्नीशिया (जैसे कि सी वाटर मैग्नीशिया) प्राप्त करने के लिये सिन्टर्ड अथवा फ्यूज मैग्नीशिया प्राप्त करने के लिये फ्यूज किया जा सकता है। फ्यूज मैग्नीशिया का उत्पादन विभिन्न ग्रेडों में किया जाता है, जिन्हें साधारणतया उनकी रसायनिक विशेषताओं (जैसेकि एमजीओ, सीएओ, एसआईओ₂, ए₁₂ओ₃, एफ ई 2ओ₃,

बी 2ओ3) और भौतिक विशेषताओं (जैसेकि वल्क घनत्व, क्रिस्टल साईज, टायर पोरोसिटी) के संदर्भ में वर्गीकृत किया जाता है। सम्बद्ध फ्यूज्ड मैग्नीशिया को कस्टम टेरिफ एक्ट 1975 की अनुसूची के कस्टम उपशीर्ष 2519.90 अध्याय के तहत और अन्तराष्ट्रीय व्यापार वर्गीकरण के 2519.90.01 और 2519.90.03 के तहत वर्गीकृत किया जाता है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल संकेतात्मक है और मौजूदा जांच के कार्यक्षेत्र पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं हैं।

4.1 तथाकथित घरेलू उद्योग द्वारा निवेदन

तथाकथित घरेलू उद्योग द्वारा इस संबंध में कोई भी निवेदन नहीं किये गये हैं।

4.2 निर्यातकों द्वारा निवेदन

निर्यातकों द्वारा इस संबंध में कोई भी निवेदन नहीं किये गये हैं।

4.3 आयातकों, उपयोगकर्ताओं और संघों द्वारा प्रतिवेदन

क. प्राकृतिक फ्यूज्ड मैग्नीशिया को जमीन से खनन द्वारा प्राकृतिक रूप से प्राप्त होने वाले मैग्नीसाइट के इलैक्ट्रीक आर्क फरनेस में इलैक्ट्रो फ्यूजन द्वारा उत्पादित किया जाता है, जबकि सिन्टर्ड सी-वाटर मैग्नीशिया, जो पहले मैसर्स बिरला पैरीक्लेज द्वारा उत्पादित किया जाता था। साफ्ट अथावा घर्षन भट्टी में रसायनिक अनुक्रिया, अवक्षेपण, शुष्कीकरण और सिंटरीकरण के जरिए सी-वाटर में मैग्नीशिया की मात्रा (प्रायः भार द्वारा 3-4 प्रतिशत से अधिक नहीं) के संश्लेषण की प्रक्रिया द्वारा प्राप्त होता है। अतः इन दोनों की उत्पादन की प्रक्रिया काफी अलग है और यह भिन्न प्रकार की विशेषताओं वाली होती है।

ख. यद्यपि, फ्यूज्ड मैग्नीशिया और सिन्टर्ड सी-वाटर मैग्नीशिया दोनों ही मटर के दाने (पीज) अथवा (पैलेट्स) (सामान्यतया लगभग 15-20 मि.मी के आकार के) के रूप में सप्लाई किये जाते हैं तथापि, निर्माण किये जाने वाले रिफ्रैक्ट्री उत्पाद की प्रकृति और गुणवत्ता के अनुसार इन्हें 1 मि.मी, 1-2 मि.मी, 2-3 मि.मी और इसी प्रकार के पैमानों से छोटे के आकारों में पीसा जाता है।

तथापि, प्राकृतिक रूप से फ्यूज्ड मैग्नीशिया और सिन्टर्ड सी-वाटर मैग्नीशिया की रसायनिक और भौतिक विशेषताएं द्रव्यात्मक रूप से भिन्न होती हैं और यह रिफ्रैक्ट्री की गुणवत्ता और कार्य निष्पादन को प्रभावित करती हैं। जैसाकि पिछले आवेदन और अनुबंधों में पहले ही दर्शाया गया है, विशेषताओं में प्रमुख भिन्नताओं का ब्यौरा नीचे दिया गया है -

विशेषताएं	नेचुरल फ्यूज मैग्नेशिया (विशिष्ट)	सिन्टर्ड मैग्नेशिया पैरिक्लेज	सी-वाटर (प्रीमियर) पैरिक्लेज	बिरला पेरिक्लेज का सिन्टर्ड सी-वाटर मैग्नेशिया
एमजीओ (भार का प्रतिशत) MgO (% by wt)	97	97.2		96.9
एस 02 (भार के प्रतिशत) SiO_2 (% by wt)	1.9	0.25		0.44
सीएओ (भार का प्रतिशत) CaO (% by wt)	1.0	2.1		2.37
एएज2ओ3 (भार का प्रतिशत) Al_2O_3 (% by wt)	—	0.7		0.11
एफईओ (भार का प्रतिशत) FeO (% by wt)	—	0.2		0.17
बी2ओ3 (भार का प्रतिशत) B_2O_3 (% by wt)	—	0.01		0.02
बल्क डेनसिटी Bulk Density (ग्रा/सीसी)(gm/cc)	3.45	3.40		3.38
क्रिस्टल साइज	औसत 450	120		100

सुनवाई में यह उल्लेख किया गया है कि सी वाटर मैग्नेशिया में बी टू ओ 3 की मात्रा, रिफ्रैक्ट्री के कार्य निष्पादन पर प्रतिकूल असर डालती है। दूसरी तरफ फ्यूज्ड मैग्नेशिया का उच्चतर क्रिस्टल आकार, इस्पात बनाने में लौह-चून के प्रति प्रतिरोध में मैटिरियल प्रभाव डालती है। अतः सुनवाई में यह उल्लेख किया गया कि सी-वाटर मैग्नेशिया के स्थान पर कच्चे माल के रूप में फ्यूज्ड मैग्नेशिया को प्रयोग में लाते हुए नये रिफ्रैक्ट्री सूत्रकों से रिफ्रैक्ट्री के कार्य निष्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई और यह 90 के शुरुआती वर्षों के 350 ताप (हीट्स) से बढ़कर वर्ष 1999-2000 तक 1000-1200 ताप

(हीट्स) तक हो गया (और यह वर्तमान में इससे भी बढ़कर है)। यह वृद्धि जीवन (पिछले पांच वर्षों में इस्पात बनाने की क्षमता में कोई महत्वपूर्ण वृद्धि किये बगैर) से पिछले दशक की तुलना में इस्पात उद्योग द्वारा मैग्नेशिया कार्बन रिफ्रेक्ट्री मांग में भारी कमी आई है ।

ग. आयातित फ्यूज मैग्नेशिया का मुख्य उपयोग इस्पात संयंत्रों के एल0डी0 कन्वेक्टर्स में प्रयोग के लिये मैग्नेशिया कार्बन ब्रिक बनाने के लिये किया जाता है । दूसरी तरफ, सिन्टर्ड सी वाटर मैग्नेशिया का उपयोग इ0ए0एफ0 में प्रयोग के लिये जले हुए मैग्नेसाइट और मैक्रोम ब्रिक बनाने, सीमेंट रोटर, किलन, कापर स्मेल्टर्स बनाने के लिये किया जाता है ।

घ. फ्यूज नेचुरल मैग्नेशिया और सेन्टर्ड सी- वाटर मैग्नेशिया ऐसे उत्पाद नहीं हैं जो, 1990 के शुरुआती वर्षों से जब से कि रिफ्रेक्ट्री उद्योग इन दोनों मदों का आयात कर रहा है और बिरला पैरिक्लेज के स्थापित होने के पूर्व व 1998 के शुरुआती महीनों से काफी पहले, विनिमय नहीं है । फ्यूज मैग्नेशिया और सी-वाटर मैग्नेशिया इस्पात उद्योग द्वारा चाहे जाने वाले किन्हीं विशिष्ट प्रयोगों और निष्पादन स्तरों के लिये आसानी से प्रतिस्थापनीय नहीं हैं ।

ड. इस्पात की बदलती हुई प्रौद्योगिकी, प्रचालन शर्तों, इस्पात उद्योग द्वारा निर्धारित निष्पादन गारंटियों के कारण रिफ्रेक्ट्री विनिर्माताओं को उच्चतर बल्क घनत्व, बी 2ओ3 की शून्य मात्रा और अधिक उच्चतर क्रिस्टल आकार के कारण फ्यूज मैग्नेशिया (सी वाटर मैग्नेशिया की तुलना में) के आधार पर उत्पादों का नये सूत्र विकसित करने पड़े ।

च. पाटनरोधी शुल्क लगाने की मांग करते हुए मैसर्स बिरला पैरिक्लेज द्वारा दिनांक 12 मार्च 1997 को दिये गये आवेदन में यह उल्लेख किया गया कि सिन्टर्ड मैग्नेशिया के विनिर्देश में निम्नलिखित विशेषताएं होगी - एमजीओ-97.5 प्रतिशत न्यूनतम, सीएओ - 1.8 प्रतिशत अधिकतम, एसआईओ2 - 0.35 प्रतिशत अधिकतम, आर2ओ3 - 0.03 प्रतिशत अधिकतम, बी2ओ3 - 0.25 प्रतिशत अधिकतम । तथापि यह मालूम हुआ कि मैसर्स बिरला पैरिक्लेज द्वारा विभिन्न रिफ्रेक्ट्री विनिर्माताओं को जो सामग्री वास्तव में सप्लाई की गई थी उसमें ये विनिर्देश पाये गये :- एमजीओ - 97.00 प्रतिशत, सीएओ - 2.10

प्रतिशत, एसआईओ - 0.35 प्रतिशत, एफई2ओ3 - 0.18 प्रतिशत, एएल2 ओ3 - 0.12 प्रतिशत, बी 2ओ3 - 0.025 प्रतिशत । ये बिरला पैरीक्लेज द्वारा सिन्टर्ड सी-वाटर मैग्नीशिया और चीन से आयातित फ्यूज मैग्नीशिया से इस बात से काफी भिन्न थे कि इनमें बी 2 ओ 3 की मात्रा शून्य और बल्क घनत्व 3.45 ग्राम सी.सी. (मै0 बिरला पैरीक्लेज उत्पाद के 3.40 ग्राम सी.सी की तुलना में) और 300 माइक्रोन से अधिक का क्रिस्टल आकार (मैसर्स बिरला पैरीक्लेज उत्पाद के 100 माइक्रोन के क्रिस्टल आकार की तुलना में) था ।

- छ. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित तथा चीन जनवादी गणराज्य से आयातित संबद्ध वस्तु विशेषताओं के संबंध में जैसे के भौतिक और रसायनिक विशेषताओं, कार्यों और उपयोग, उत्पाद विनिर्देशों, मूल्य निर्धारण और विपणन व कर वर्गीकरण में काफी मिलती जुलती नहीं हैं । चीन का फ्यूज मैग्नीशिया जापान, इजराइल, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि जैसे देशों में उत्पादित फ्यूज मैग्नीशिया से काफी अलग प्रकार का होता है । प्रत्येक उत्पाद, अलग प्रकार के विशिष्ट क्षेत्र में प्रयोग में लाया जाता है और एक प्रकार की ईट दूसरे प्रकार को प्रतिस्थापित नहीं कर सकती । फ्यूज मैग्नीशिया और समुद्री जल (सी वाटर) मैग्नीशिया इन विशेषताओं के संदर्भ में अलग-अलग प्रकार के होते हैं । ये दोनों वाणिज्यिक तौर पर प्रतिस्थापनीय नहीं हैं । भारतीय उपभोक्ताओं ने इनको अदल-बदल कर प्रयोग में लाया है ।

(घ) घरेलू उद्योग

३. पूर्व घरेलू उद्योग द्वारा प्रतिबेदन

(क) मैसर्स बिरला पैरीक्लेज, जो भारतीय रेयन उद्योग का एक एकक है, ने वर्ष 1996 में सी-वाटर मैग्नीशिया की 50,000 मीटरी टन के उत्पादन के लिये विशाखापट्टनम, आन्ध्रप्रदेश में एक यूनिट स्थापित करने की योजना बनाई थी । इसकी मैकेनिकल कार्य वर्ष 1997 में पूरा हो गया था । सी-वाटर मैग्नीशिया, के लिये विपणन लगभग 40,000 - 50,000 मी0 टन था ।

(ख) मैसर्स बिरला पैरीक्लेज ने अपना संयंत्र लगाया और फरवरी 1998 में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया । उत्पाद की गुणवत्ता अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के

समरूप थी और उपयोगकर्ता उद्योग - स्थानीय रिफ़ैक्ट्री मैन्युफ़ैक्चरर्स/स्टील प्लांट ने अपने संतोषानुसार इस सामग्री का उपयोग किया। इस अवधि के दौरान यह पाया गया कि चायनीज फ़्यूज्ड मैग्नीशिया जो सी-वाटर मैग्नीशिया के लिये एक समान प्रकार का उत्पाद है, के भारत में होने वाले आयात में काफी वृद्धि हुई और यह 1990 के पूर्व वर्षों के केवल 2000 मीटरी टन से बढ़कर 1995-96 तक 25,000 मीटरी टन से अधिक हो गया। फ़्यूज्ड मैग्नीशिया का चीन में बाजार मूल्य और उत्पादन लागतों की एक विस्तृत विश्लेषण से बिरला पैरीक्लेज इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि फ़्यूज्ड मैग्नीशिया का कम मूल्यों पर भारतीय बाजार में पाटन हो रहा है। इससे यह आशंका व्यक्त की गई कि यह सी-वाटर मैग्नीशिया उद्योग जो अपने विकास के शुरुआत काल में है, को समाप्त कर देगा। तदनुसार वर्ष 1997 में एक पाटनरोधी आवेदन दायर किया गया था।

(ग) पाटनरोधी जांच शुरू की गई थी, लेकिन कोई अनंतिम उपाय लागू नहीं किये गये थे। निर्विष्ट प्राधिकारी ने अंततया 15 महीनों की समयावधि के समाप्त हो जाने के बाद फरवरी 1999 में फ़्यूज्ड मैग्नीशिया पर पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने की सिफारिश की और इसकी मात्रा काफी कम थी। इस अवधि के दौरान पाटे गये रास्ते फ़्यूज्ड मैग्नीशिया के वृद्धित आयात ने सी-वाटर मैग्नीशिया के समान प्रकार के उत्पादन की खपत को प्रभावित किया। एक सतत प्रोसेस प्लांट होने के कारण, बिरला पैरीक्लेज के पास अंतिम रूप से निर्मित वस्तु का एक संचित भंडार जमा हो गया और उन्हें 1998 के अंत में अपने प्रचालनों की समीक्षा करनी पड़ी। मूल्यांकन करने के बाद इसने दिसम्बर 1998 में अपने प्रचालनों को बंद करने का निर्णय लिया क्योंकि अधिकतम क्षमता से नीचे प्रचालन करने से उत्पादन की लागत में वृद्धि हो रही थी और भंडार की स्थिति से भी भंडारण की समस्या, कार्यकारी पूंजी और वित्तीय हानि हो रही थी। प्रचालन बंद करने के समय इस यूनिट के पास 6000 मीटरी टन से अधिक की सामान सूची थी।

(घ) सितम्बर 1999 में मैनेजमेंट इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि फ़्यूज्ड मैग्नीशिया के आयातों के स्तर पर और बहुत ही कम पाटनरोधी शुल्क के साथ यह व्यवहार्य नहीं है कि संयंत्र को चलाया जाए। समीक्षा के बाद शेयर होल्डरों ने इस प्लांट को बंद करने और इसकी परिसंपत्तियों को बेचने का निर्णय लिया। इस प्रकार लगभग 350 करोड़ का निवेश व्यर्थ हो गया।

5.1 निर्यातकों द्वारा निवेदन

निर्यातकों द्वारा इस संबंध में कोई निवेदन नहीं किया गया है।

5.2 आयातकों, उद्योगकर्ताओं और संघों द्वारा निवेदन

क. मैसर्स बिरला पैरिक्लेज ने 1998 के शुरुआती महीनों में सी-वाटर मैग्नीशिया का ट्रायल उत्पादन शुरू किया। तथापि, उन्होंने इस्पात उद्योग में बदलती हुई प्रौद्योगिकी और निष्पादन अपेक्षाओं, अपने उत्पादन की घटिया गुणवत्ता और परिणाम स्वरूप उनको अस्वीकार किये जाने, सकल आर्थिक मंदी, आदि के कारण दिसम्बर 1998 तक अपना उत्पादन बंद कर दिया। मार्च 1999 से पाटनरोधी शुल्क के लागू होने के बावजूद भी बिरला पैरिक्लेज के प्रबंधन ने 1999 के मध्य में सी-वाटर मैग्नीशिया के कारोबार को बंद करने का निर्णय लिया क्योंकि यह उनके हितों की परिधि से बाहर चला गया था। यह बात दिनांक 11-4-1999 के टेलीग्राफ समाचार पत्र में प्रकाशित हुई और बाद में यह अन्य समाचार पत्रों जैसे कि बिजनेस लाइन (द हिन्दू) और इकोनोमिक टाइम्स में प्रकाशित हुई। यह बात भी नोट करने योग्य है कि पाटनरोधी शुल्क के बारे में सीईजीएटी के समक्ष एक अपील दायर करने के बावजूद भी बिरला पैरिक्लेज ने मामले में रुचि नहीं दिखाई। उन्होंने अपने सयंत्र एवं मशीनरी की नीलामी भी कर दी थी जैसाकि दिनांक 27-10-99 को इकोनोमिक टाइम्स में प्रकाशित किया गया। यह बात सीईजीएटी द्वारा जनवरी 2000 में अपना निर्णय दिये जाने के पूर्व हुई थी। बिरला पैरिक्लेज ने भी संघ को अपने दिनांक 20-4-2001 के पत्र के अनुसार अधिकारिक रूप से यह पुष्ट किया कि वे नीतिगत निर्णय के अनुसार सी-वाटर मैग्नीशिया कारोबार से हट रहे हैं और पुनर्संरचना कर रहे हैं। इस प्रकार 1999 के मध्य से इस संबंध में कोई भी घरेलू उद्योग अस्तित्व में नहीं है और फ्यूज्ड मैग्नीशिया पर पाटनरोधी शुल्क जैसाकि कानून में व्यवस्थित है, से कोई उद्देश्य पूरा नहीं हुआ है।

ख. चीन से आयात होने वाले फ्यूज्ड मैग्नीशिया पर पाटनरोधी शुल्क लगाते हुए कस्टम अधिसूचना संख्या 35/99, दिनांक 17 मार्च 1999 जारी की गई थी। इसके कुछ ही समय बाद दिनांक 11.4.1999 को श्री कुमारमंगलम बिरला को टेलीग्राफ समाचार पत्र में उद्धृत किया गया था कि "यह समूह सीमेंट,

अल्यूमीनियम, कार्बन ब्लैक, फर्टीलाइजर, उर्जा और वित्तीय सेवा पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा"। इस समाचार पत्र ने यह भी जोड़ा कि उन्होंने हाल ही में इंडियन रेयन के सी-वाटर मैग्नीशिया यूनिट को बंद कर दिया है। बिजनेस स्टैंडर्ड स्मार्ट इन्वेषटर मैग्जीन दिनांक 23.9.1999 ने सूचना दी कि भारतीय रेयन पुनर्संरचना के रूप में अपने सी-वाटर मैग्नीशिया यूनिट का निपटान करेगा। इस रिपोर्ट में यह भी जोड़ा गया कि यह यूनिट जो 341 करोड़ रुपये की लागत पर स्थापित की गई थी, अपने चालू होने के समय से लागत बढ़ जाने के कारण अव्यवहार्य हो गई थी। दोबारा हिन्दी बिजनेस टाइम्स और इकोनोमिक टाइम्स दोनों में दिनांक 2.10.1999 ने रिपोर्ट प्रकट हुई कि इंडियन रेयन के निदेशक मंडल ने सी-वाटर कारोबार की परिसम्पत्तियों को बेचने का निर्णय ले लिया है क्योंकि विभिन्न विकल्पों की जांच करने के बाद इस कारोबार को अव्यवहार्य पाया गया। इसके बाद दिनांक 27.10.1999 और 16.2.2000 के इकोनोमिक टाइम्स में बिरला पैरीक्लेज के सी-वाटर मैग्नीशिया संयंत्र के पम्पों, फिल्टरों, क्लोरीनेशन प्लान्टों आदि के निपटान के लिये विज्ञापन दिये गये थे।

ग. समाचार पत्र की रिपोर्ट के अनुसार बिरला पैरीक्लेज फैक्टरी के बंद होने का कारण लागतों का बढ़ जाना और परिणामस्वरूप यूनिट का अव्यवहार्य होना था न कि इसका कारण फ्यूज्ड मैग्नीशिया का आरोपित पाटन था। यह फैक्टरी जांच के बाद और मार्च 1999 में पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने के उपरान्त 1999 के बीच के किन्ही महीनों में बंद हुई थी। यह संयंत्र अपनी स्थिति में अन्तर्निहित इस तकनीकी विरोधाभास के कारण बंद हुआ था कि सी-वाटर मैग्नीशिया ; फ्यूज्ड मैग्नीशिया द्वारा प्रतिस्थापनीय है, जैसाकि ऊपर उल्लेख किया गया है।

ड. जांच की अवधि

6. आयातकों, उद्योगकर्ताओं और संघों द्वारा निवेदन

क. दिनांक 24-3-2003 की गजट अधिसूचना के अनुसार इस मामले में जांच की अवधि 1-1-2002 से 31-12-2002 होगी। यह प्रस्तुत किया गया कि यह अधिसूचना माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा 2002 के सिविल अपील संख्या 4936-37 में दिये गये दिनांक 5-3-2003 के उस

आदेश के अनुरूप प्रतीत नहीं होती जिसमें माननीय न्यायालय ने पृष्ठ संख्या 2 पर निर्देश दिया था कि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात सहित कि क्या यह शुल्क 2 फरवरी 1999 से (जब निर्दिष्ट प्राधिकारी के अंतिम निष्कर्ष अधिसूचित किये गये थे) किसी भी अवधि के लिये वापस लिये जा सकते हैं, सारे मामले पर विचार करें। अतः जांच की अवधि 2 फरवरी 1999 से लेकर आगे की होनी चाहिए।

च. क्षति और संबंधात्मक कारण

संघ (ईरमा) द्वारा निवेदन

7. (क) फ्यूज्ड मैग्नीशिया के आयात का, मैसर्स बिरला पैरीक्लेज को हुई समस्याओं के साथ कोई कारणात्मक संबंध नहीं है। भारतीय रिफैक्ट्रीज उद्योग द्वारा जांच शुरू करने के पहले, जांच के दौरान और यहां तक कि पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने के बाद भी अन्य देशों से फ्यूज्ड मैग्नीशिया का आयात किया और वे आज भी ऐसा कर रहे हैं। इतना ही नहीं कई अन्य आयातकों ने भी बिरला पैरीक्लेज से एक से अधिक अवसरों पर सी-वाटर मैग्नीशिया के लिये मांग की, लेकिन गुणवत्ता निर्दिष्ट स्तर से कम की थी अथवा गुणवत्ता के कारण माल अस्वीकार हो गया।

(ख) आर्थिक उदारीकरण के युग में भारत में बदलती हुई इस्पात बनाने की पद्धतियों और भारतीय इस्पात उद्योग को लागत प्रभावी रिफैक्ट्रीज प्रस्तावित करने की योजनाओं को ध्यान में रखते हुए फ्यूज्ड नैचुरल मैग्नीशिया और सिन्टर्ड सी-वाटर मैग्नीशिया का आयात, शुद्धतः तकनीकी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए किया गया था।

(ग) इस प्रकार घटनाओं का क्रम दर्शाता है कि क्षति, जैसाकि मैसर्स बिरला पैरीक्लेज ने दिनांक 17.3.1997 की अपनी याचिका में आरोप लगाया है, फ्यूज्ड मैग्नीशिया के आयात के कारण नहीं हो सकती। इसके अलावा, बिरला पैरीक्लेज एक कारोबारी निर्णय के कारण बंद हुई थी बाजजूद इस बात के कि सरकार द्वारा मार्च 1999 में पाटन रोधी शुल्क लगा दिया गया था।

छ. पाटन का आरोप

8. (क) जैसाकि सीईजीएटी के समक्ष आई.आर.एम.ए. द्वारा पहले ही प्रस्तुत किया गया था कि चीन में फयूज्ड नेचुरल मैग्नीशिया का घरेलू बिक्री मूल्य, आरएमबी 1650/1850 प्रति मीटरीटन था (अमेरिकी डालर 190/210 प्रति मीटरी टन के बराबर)। चीन से भारत में आयातित फयूज्ड मैग्नीशिया का सीआईएफ मूल्य प्रतिमीटरी टन 260/290 अमेरिकी डालर था। यह मूल्य चीन द्वारा इसी उत्पाद के लिये उद्धृत मूल्य के साथ अनुकूल दृष्टि से तुलनात्मक था लेकिन जिनका निर्यात संयुक्त राज्य अमेरिका जापान आदि देशों को किया जाता है। मैसर्स बिरला पैरीक्लेज द्वारा अपने आवेदन में यथानिर्दिष्ट इजराइल से फयूज्ड मैग्नीशिया का मूल्य, फयूज्ड हाईप्युरेटी सी-वाटर मैग्नीशिया से संबंधित है जो प्रति मी. टन 1000 अमेरिकी डालर पर बिकता है और यह चाईनीज फयूज्ड मैग्नीशिया से भिन्न है। इस प्रकार पाटन के आरोप का कोई आधार अथवा तर्कसंगतता नहीं है।

(ख) इसके अलावा, यह भी इंगित किया गया है कि चीन द्वारा सप्लाई किये गये फयूज्ड मैग्नीशिया का सीआईएफ मूल्य इसकी उत्पादन की लागत से कम नहीं है, जो इस बात से सिद्ध होता है कि वर्ष 1998 से लिये जा रहे मूल्य को सतत रूप से कम किया गया है।

ज. प्रकटीकरण विवरण के प्रति उत्तर

9. तथाकथित घरेलू उद्योग द्वारा निवेदन -

कोई निवेदन प्राप्त नहीं हुए हैं।

9.1 निर्यातकों द्वारा निवेदन

कोई निवेदन प्राप्त नहीं हुए हैं।

9.2 आयातकों , उपयोगकर्ताओं और संघों द्वारा निवेदन

1. मैसर्स टाटा रिफ़्रैक्ट्री लिमिटेड

(क) चीनी विनिर्माता अपनी अर्थव्यवस्था के परिमाण और बाजार मांग के आधार पर अपने उत्पाद का मूल्य निर्धारित करते रहे हैं। चीन विश्व के कुल फयूज मैग्नेशिया का लगभग 90 प्रतिशत भाग का उत्पादन करता है। इसके अलावा यह भी उल्लेख किया जाता है कि फयूज मैग्नेशिया के संबंध में चीनी जनवादी गणराज्य से निर्यात मूल्य में पिछले वर्षों से क्रमिक रूप से कमी होती रही है। यह भी उल्लेख किया जाता है कि चीन मूल के अथवा वहां से निर्यात होने वाले फयूज मैग्नेशिया पर भारत के अलावा विश्व में किसी भी देश में पाटन रोधी शुल्क नहीं लगाया गया है।

(ख) उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि मैसर्स बिरला पैरीक्लेज अन्य कारणों के कारण बन्द हुई है जैसे कि वर्ष 1997 - 98 से 2000-01 तक इस्पात उद्योग में भारी मंदी, एलडी प्रक्रिया और सतत कास्टिंग के अधिक उपयोग के साथ इस्पात बनाने की प्रक्रिया में परिवर्तन, आक्सीजन लेंसेज और स्लग स्पलेसिंग के नये डिजायनों जैसे प्रचालन मापदंडों में परिवर्तन जिसके परिणामस्वरूप रिफ़्रैक्ट्री लाइनिंग का जीवन 350 ताप (हीट्स) से बढ़कर 1000 ताप (हीट्स) से भी अधिक हो गया है। अतः इन बाजार स्थितियों ने घरेलू रिफ़्रैक्ट्री उद्योग को गंभीर रूप से प्रभावित किया और इससे बिरला पैरीक्लेज भी प्रभावित हुआ और जो चीनी निर्यातकों द्वारा किये गये किसी भी पाटन के कारण नहीं था।

(ग) जांच की अवधि 2-2-1999 से होनी चाहिए न कि 1-1-2002 से 31-12-2002 तक ।

2.

मैसर्स ओ0सी0एल0 इंडिया लिमिटेड

माननीय उच्चतम न्यायालय की टिप्पणी यह निष्कर्ष निकालने की अनुमति नहीं देता जैसा कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निष्कर्ष निकाले गये हैं कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने विचाराधीन उत्पादन और सामान वस्तु के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निकाले गये निष्कर्षों को ठीक माना है।

3.

मैसर्स इंडियन रिफ़ैक्ट्री मेकर्स एसोसियेशन

(क) विभिन्न तिथियों पर विचार करते हुए और माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए, समीक्षा की अवधि 2 फरवरी 1999 से होनी चाहिए।

(ख) विचाराधीन उत्पाद और समान प्रकार की वस्तु के संबंध में यह तत्काल स्पष्ट नहीं है कि क्या सीईजीएटी के दिनांक 19-1-2000 के आदेश को एक तरफ करने से ही निर्दिष्ट प्राधिकारी इस निष्कर्ष को निकाल सकेंगे कि फयूज मैग्नेशिया और सी-वाटर मैग्नेशिया समान प्रकार के उत्पाद हैं, जैसाकि पाटनरोधी नियम 1995 में दिया गया है। चूंकि निर्दिष्ट प्राधिकारी को सारे मामले (इस बात सहित कि क्या शुल्क 2 फरवरी 1999 की किसी अवधि से वापस लिया जा सकता है) की समीक्षा करनी है, अतः संघ निवेदन करता है कि उनके दिनांक 23 अप्रैल 2003 की उनकी पुनरीक्षा याचिका में और दिनांक 7 मई 2003 के मौखिक निवेदन पर लिखित विवरण में दिये गये समान प्रकार की मर्दों के संबंध में दिये गये तथ्यों और तर्कों पर इस मामले का निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा उचित रूप से ध्यान में रखा जाए।

(ग) घरेलू उद्योग के संबंध में, जैसाकि पुनरीक्षा याचिका में और तदन्तर लिखित विवरण में प्रस्तुत किया गया था, बिरला पैरीक्लेज, पर्याप्त सफ़ाई बनाये रखने में असफल रहा। पहले ही प्रस्तुत किये गये दस्तावेज के अनुसार जैसाकि पहले ही

बताया गया है कि घटिया गुणवत्ता के कारण माल अस्वीकार हो गया था । इन बातों को ध्यान में रखते हुए बिरला पैरीक्लेज ने घरेलू उद्योग के अनुरूप होने की परिभाषा के तहत नहीं आता ।

(घ) प्रकटीकरण विवरण में उल्लेख किया गया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी नोट करते हैं कि सी - वाटर मैग्नीशिया कारोबार को बंद करने का निर्णय अन्य कारणों एवं फ्यूज मैग्नीशिया के पाटन (जैसाकि मैसर्स बिरला पैरीक्लेज द्वारा आरोप लगाया गया) की वजह से था । यह मामला सीधे ही संबन्धित कारण के पहलुओं से संबंधित है । वर्ष 1997-98 और 1998-99 में कई प्रतिकूल बाजार घटक थे, जैसेकि (i) भारत में उस समय जबकि मैग्नीशिया के कच्चे माल के सभी प्रकारों और किस्मों का कुल आयात वर्ष 1997-98 में 57,000 मीटरी टन था जो गिरकर 1998-99 में 42,000 मीटरी टन रह गया, बिरला पैरीक्लेज द्वारा 40,000- 50,000 टन का गलत बाजार आकलन ; (ii) बिरला पैरीक्लेज द्वारा बैरोन (बी2ओ3) और क्रिस्टल आकार (बिरला पैरीक्लेज द्वारा विनिर्मित सी वाटर मैग्नीशिया में 80-100 माइक्रोन की तुलना में फ्यूज मैग्नीशिया में 450 माइक्रोन) के महत्व के प्रति अपर्याप्त बाजार ज्ञान (iii) इस्पात उद्योग में प्रचलनात्मक और प्रौद्योगिकी परिवर्तन जिसके परिणामस्वरूप रिफ्रेक्ट्री लाइनिंग का जीवन अधिक हो गया और यह 350 हीट्स के बढ़कर 1000 हीट्स से भी अधिक हो गया ; (iv) एकीकृत इस्पात संयंत्रों में गंभीर मन्दी और इनमें उत्पादन 1996-97 के 16.56 मिलीयन टन से घटकर 1997-98 में 15.80 मिलीयन टन रह गया (स्रोत मासिक इस्पात आंकड़े , ज्वाइंट प्लांट कमेटी) । अतः संघ इस बात पर बल देगा कि इन घटकों में से कोई भी घटक इतना महत्वपूर्ण था जिसके कारण बिरला पैरीक्लेज को हानिया उठाई पड़ी और जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें अपने संयंत्र को बंद करना पड़ा । यह बात इस तथ्य से भी साबित होती है कि बिरला पैरीक्लेज ने मार्च 1999 में पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने के शीघ्र बाद ही अपने संयंत्र को बंद करने का निर्णय लिया और

उन्होंने 1999-2000 के दौरान सीईजीएटी के सम्मुख अपील किये जाने के लिये दबाव नहीं डाला।

(ड) इन बातों को ध्यान में रखते हुए कि (i) जैसे कि पहले दर्शाया गया था कि सी-वाटर मैग्नेशिया और फ्यूज मैग्नेशिया के बीच रसायनिक और भौतिक विशेषताओं में कोई बहुत भिन्नता नहीं है, (ii) बिरला पैरीक्लेज ने 1999 के मध्य से अपना संयंत्र बंद कर दिया था और उन्होंने 8.91 करोड़ रुपये के निविल अधिशेष पर अपना संयंत्र और मशीनरी बेच दी थी, (iii) संयंत्र के बंद होने का कारण मैसर्स बिरला पैरीक्लेज द्वारा बाजार की अपूर्ण जानकारी होना था और (iv) बिरला पैरीक्लेज संयंत्र, पाटन-रोधी शुल्क (जिसको लगाये जाने की सिफारिश फरवरी 1999 में की गई थी और जिसको मार्च 99 से लगाया गया था) लगाये जाने के बाद बन्द हुआ था, शुल्क को जारी रखने और पुनरीक्षा के इस संबंध में कि क्या शुल्क को 2-2-1999 के किसी अवधि से वापस लिया जा सकता है, संघ अनुरोध करता है कि चीन से फ्यूज मैग्नेशिया के आयात पर पाटनरोधी शुल्क जारी रखने से पाटनरोधी नियम, 1995 में यथापरिकल्पित उद्देश्य पूरा नहीं होगा। पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने का अनुरोध नहीं किया गया अतः इसे 2-2-1999 से वापस ले लिया जाना चाहिए।

इ. प्राधिकारी द्वारा जाँच

10. (i) विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु

प्राधिकारी नोट करते हैं कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने सीगेट के दिनांक 19-1-2000 के विवादित आदेश को यह कहते हुए निरस्त कर दिया था कि "पार्टियां इस बात पर सहमत हैं कि विवादित आदेश को रद्द करने हेतु कोई कारण दर्ज न किया जाए।" यह उल्लेख किया गया है कि माननीय उच्चतम न्यायालय के उपर्युक्त अभिमतों का यह निष्कर्ष नहीं निकलता है कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु के बारे में निर्दिष्ट प्राधिकारी के जांच परिणामों को बरकरार रखा है। प्राधिकारी का मानना है कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने इस विवाद में पड़ने के बजाय प्राधिकारी को वास्तविक स्थिति पर विचार करने का निर्देश दिया है। यह तथ्य कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु के बारे में निर्दिष्ट प्राधिकारी के अंतिम जांच परिणामों पर कोई निर्देश नहीं दिए हैं, प्राधिकारी विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु के संबंध में अपने अंतिम जांच परिणामों को दोहराते हैं।

(ii) घरेलू उद्योग

क. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जैसाकि आडिटर्स रिपोर्ट में दर्शाया गया है कि प्रतिकूल बाजार परिस्थितियों के कारण कम्पनी ने अपने प्रचालन बन्द करने का तथा 1 अक्टूबर, 1999 से सी-वाटर मैग्नेशिया कारोबार को छोड़ने का निर्णय लिया। 31.3.2000 को समाप्त होने वाले वर्ष का तुलन-पत्र, 31.3.1999 तक सी-वाटर मैग्नेशिया का 10619 मीटरी टन का उत्पादन तथा 31.3.2000 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये शून्य उत्पादन दर्शाता है।

ख. प्रस्तुत किये गये दिनांक 22.7.1999 के बोर्ड के संकल्प की प्रति के अनुसार यह उल्लेख किया गया है कि बोर्ड को विशाखपत्तनम स्थित सी-वाटर मैग्नेशिया संयंत्र के प्रतिकूल कार्य प्रणाली के बारे में अवगत कराया गया था। बोर्ड को दोबारा सूचित किया गया था कि माप उन बातों पर आधारित थे जिन पर कम्पनी ने लगभग चार वर्ष पहले सी-वाटर मैग्नीशिया को कार्यान्वित करने की बात कही थी, पर तब से इनमॉपों में बिल्कुल ही परिवर्तन हो गया है अर्थात् जब कम्पनी ने इस परियोजना की परिकल्पना बनाई थी उस समय यह सोचा गया था कि कम से कम सी-वाटर के अंतर्राष्ट्रीय मूल्य स्थिर बने रहेंगे, लेकिन, मुख्यतया चीन से बड़ी मात्रा में फ्यूज्ड मैग्नीशिया के पाटन और सी-वाटर मैग्नीशिया के उपयोगकर्ता उद्योग अर्थात् स्टील और रिफ्रेक्ट्री उद्योग में आई अभूतपूर्व गिरावट की प्रवृत्ति के कारण इसके मूल्य प्रतिटन 475 अमेरिकी डालर से गिर कर प्रतिटन 325 अमेरिकी डालर के अप्रत्याशित और अविश्वसनीय स्तर पर पहुंच गये।

बोर्ड को यह भी सूचित किया गया था कि उपर्युक्त स्थिति के कारण यहां तक कि पी.बी.आई. डी.टी. स्तर पर भी हानियाँ हैं और इस प्रकार ब्याज के किसी भी हिस्से की वसूली नहीं हो सकती और निकट भविष्य में भी ऐसे होने की संभावना भी नहीं है। इस प्रकार, प्रतिकूल बाजार परिस्थितियों, जिसके परिणामस्वरूप कम मात्रा में माल उठाया गया और स्टॉक का भारी संग्रहण हो गया, के कारण इस संयंत्र के प्रचालनों को 23 दिसम्बर 1998 से अस्थायी तौर पर बंद कर दिया गया।

बोर्ड को यह भी सूचित किया गया कि महत्वहीन होते हुए आधार पर इस संयंत्र अन्तरित करने/बिक्री करने, निपटान करने के विकल्प की भी छानबीन की जा रही है।

(ग) 31-3-2002 को समाप्त होने वाले वर्ष का तुलन पत्र, अनुसूची 18.8 में दर्शाता है कि बोर्ड ने लेखा वर्ष 1999-2000 में सी-वाटर मैग्नीशिया के कारोबार को छोड़ने का निर्णय ले लिया था और तदनुसार 31-3-2000 की स्थिति के अनुसार बेची न जा सकी सम्पत्तियों के मूल्य को उस स्तर पर लाया गया जिस पर की उनकी बिक्री हो सके।

(घ) मैसर्स बिरला पैरीक्लेज के कार्यकारी अध्यक्ष द्वारा इंडियन रिफ़ैक्ट्रीज मैकर्स एसोसिएशन को लिखे गये दिनांक 30 अप्रैल 2001 के पत्र में उल्लेख किया गया है कि एक नीतिगत निर्णय और पुनर्संरचना किये जाने के के भाग के रूप में इस समूह ने सी-वाटर मैग्नीशिया कारोबार को छोड़ने का निर्णय लिया है।

(ङ) प्राधिकारी नोट करते हैं कि संयंत्र में प्रचालनों को 23 दिसम्बर 1998 से अस्थायी तौर पर आस्थगित कर दिया था। चूंकि वर्ष 1999-2000 की वित्तीय रिपोर्ट, अप्रैल 1999 के बाद से शून्य उत्पादन दर्शाती है, अतः यह मान लिया जाता है कि उत्पादन 23 दिसम्बर 1998 से बंद था। माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के अनुरूप प्राधिकारी नोट करते हैं कि उत्पादन को अस्थायी तौर पर बंद करने का निर्णय प्राधिकारी के अंतिम निष्कर्षों से पूर्व ले लिया गया था। तथापि कंपनी द्वारा अपने दिनांक 22-7-1999 की बोर्ड मीटिंग द्वारा इस यूनिट को बंद करने का निर्णय लिया गया। 31-3-2000 को समाप्त होने वाली अवधि के लेखा विवरण के अनुसार आडिटर रिपोर्ट उल्लेख करती है कि कंपनी ने 1-10-1999 को प्रभाग के प्रचालन बंद करने और सी-वाटर मैग्नीशिया कारोबार को छोड़ने का निर्णय लिया था।

(च) इस आंकलन की कि क्या यह फैक्ट्री फ्यूज्ड मैग्नीशिया के चीनी निर्यातकों द्वारा किये गये पाटन के कारण बंद हुई थी, विभिन्न दस्तावेजों में कंपनी की दर्ज हुई कार्रवाइयों के आलोक में जांच किये जाने की आवश्यकता होगी। बोर्ड के दिनांक 22-7-1999 के संकल्प के अनुसार कंपनी ने सोचा था कि सी-वाटर मैग्नीशिया के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य स्थिर बने रहेंगे लेकिन मुख्यतया चीन द्वारा बड़ी मात्रा में फ्यूज्ड मैग्नीशिया का पाटन और सी-वाटर मैग्नीशिया के उपयोगकर्ता उद्योग में चल रही गिरावट की प्रवृत्ति के कारण मूल्य एक अप्रत्याशित और अविश्वसनीय स्तर तक गिर गये। मैसर्स इंडियन रिफ़ैक्ट्रीज मैकर्स को भेजे गये कंपनी का दिनांक 30-4-2001 का पत्र तथापि

समूह ने सी-वाटर मैग्नेशिया कारोबार को छोड़ने का निर्णय लिया ।

(छ) अतः प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस कारोबार को बंद करने का निर्णय अन्य कारकों एवं इस उत्पाद का चीन द्वारा पाटन किये जाने के परिणामस्वरूप था ।

(ज) प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि चाहे मान भी लिया जाए कि यह उद्योग सतत पाटन के कारण बंद हुआ था, पर घरेलू उद्योग ने अपने कारोबार को पुनर्जीवित करने के लिये अपना कोई मत अथवा आशय व्यक्त नहीं किया । जैसाकि वर्ष 2001-2002 की वार्षिक रिपोर्ट में रिपोर्ट किया गया है, कंपनी ने दिनांक 31-3-2000 को बेची न जा सकी परिसम्पत्तियों के मूल्य को कम किया और इसको उस स्तर पर लाया गया जिस पर उनके लिये मूल्य प्राप्त किया जा सके । चूंकि, निपटान प्रक्रिया काफी हद तक पूरी हो चुकी है, अतः 8.91 करोड़ रुपये के निविल अधिशेष को लाभ हानि लेखे में क्रेडिट किया गया है और इसे एक अपवादित मद के रूप में दिखाया गया है ।

(झ) उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मैसर्स बिरला पैरीक्लेज फैक्ट्री के बंद होने का कारण अन्य कारक एवं चीनी निर्यातकों द्वारा फ्यूज्ड मैग्नेशिया का किया गया पाटन था ।

iii) शुल्क को जारी रखना और इस बात की समीक्षा करना कि क्या शुल्क को 2.2.1999 से किसी अवधि के लिए वापस लिया जा सकता है ।

(क) प्राधिकारी नोट करते हैं कि माननीय उच्चतम न्यायालय ने अपना आदेश पारित करते समय नियम 23 के तहत प्राधिकारी के पास उपलब्ध समीक्षा की सीमित शक्ति के बारे में अभिमत व्यक्त किया है । माननीय न्यायालय ने यह अभिमत व्यक्त किया है कि " द्वारा ध्यान नियम 23 की ओर आकृष्ट किया गया है जिसमें पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने के प्रयोजनार्थ समीक्षा की सीमित शक्ति का प्रावधान है किन्तु उसमें उसे भूतलक्षी प्रभाव से वापस लेने हेतु कोई शक्ति प्रदान करने का प्रावधान नहीं है " तथा माननीय उच्चतम न्यायालय ने प्राधिकारी को निर्देश दिया है कि वह समूचे मामले पर विचार करें जिसमें यह बात भी शामिल है कि 2 फरवरी, 1999 अर्थात् निर्दिष्ट प्राधिकारी के अंतिम जांच परिणामों की तारीख से किसी अवधि के लिए शुल्क को वापस लिया जा सकता है । माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा यह अभिमत भी व्यक्त किया गया है कि यह आदेश इस बात को स्पष्ट रूप से समझते हुए कि इसे अन्य मामलों में नजीर के रूप में उल्लिखित नहीं किया जाना चाहिए, इस मामले के विशेष तथ्यों में पारित किया जाता है ।

(ख) उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी ने समूचे मामले की समीक्षा की है। उपलब्ध रिकार्ड से यह नोट किया जाता है कि कम्पनी ने 23 दिसम्बर, 1998 से अपना प्रचालन अस्थाई रूप से बंद कर दिया था। तथापि, प्राधिकारी ने पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हुए अपने अंतिम जाँच परिणाम निकाले थे किन्तु उस समय तक कम्पनी ने उत्पादन को हस्तांतरित करने/बिक्री करने/समेटने/बंद करने अथवा संयंत्र में मशीनरी का निपटान करने के बारे में कोई मंशा जाहिर नहीं की है। संविधि में की गई अपेक्षा के अनुसार प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को अपेक्षित राहत प्रदान करने के लिए अपने अपेक्षित जाँच परिणाम निकालने की कार्रवाई की। प्राधिकारी ने सीगेट के दिनांक 19.1.2000 के आदेश के विरुद्ध 27.3.2000 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय में निर्दिष्ट प्राधिकारी के जाँच परिणामों को रद्द करते हुए एक अपील दायर की। अपील का आधार मुख्यतः समान वस्तु के मुद्दे के संबंध में टिप्पणियों (जो की विरोधाभासी प्रतीत होते हैं) पर आधारित है।

(iv) (क) प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम्पनी ने इस प्रभाग का प्रचालन बंद करने और 1 अक्टूबर, 1999 से समुद्री जल मैग्नेशिया व्यवसाय से निकल जाने का निर्णय लिया। प्राधिकारी के विचार में पाटनरोधी शुल्क वापस लेने के लिए यह सबसे अधिक युक्तिमूलक तारीख बन गई क्योंकि इस तारीख के पश्चात घरेलू उद्योग का इसमें बने रहना समाप्त हो गया। प्राधिकारी के समक्ष विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन करने के लिए अपनी इच्छा का संकेत करने के लिए घरेलू उद्योग अथवा किसी अन्य हितबद्ध पार्टी द्वारा कोई साक्ष्य अथवा अनुरोध नहीं किया गया है।

(ख) इस प्रकार प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग का 1 अक्टूबर, 1999 से इसमें बने रहना समाप्त हो गया। इसके अलावा माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रदान किए गए शुल्क की भूतलक्षी प्रभाव से वापसी की समीक्षा की शक्तियों के अनुसार, प्राधिकारी 1.10.1999 से फ्यूज्ड मैग्नेशिया पर पाटनरोधी शुल्क की भूतलक्षी प्रभाव से समाप्ति की सिफारिश करते हैं।

(ज) निष्कर्ष

11. प्राधिकारी उपरोक्त पर विचार करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि:-
- (i) मै0 बिरला पेरिक्लेस (जो कि 'सिन्टर्ड मैग्नेशिया' का विनिर्माण कर रहा था) को बन्द करने का निर्णय अन्य कारकों तथा चीन से उत्पाद के पाटन का परिणाम था।
- (ii) इस मामले के तथ्यों और परिस्थितियों के मद्देनजर, पाटनरोधी शुल्क को जारी रखना तर्कसंगत नहीं है तथा प्राधिकारी तदनुसार सिफारिश करते हैं।
- (iii) पूरे मामले पर भली-भाँति विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी 01-10-1999 से फ्यूज्ड मैग्नेशिया पर पाटनरोधी शुल्क को भूतलक्षी प्रभाव से वापस लेने की सिफारिश करते हैं।

एल. वी. सप्तऋषि, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES****NOTIFICATION**

New Delhi, the 9th June, 2003

Subject : Anti-dumping investigation (Mid-Term Review) concerning imports of Fused Magnesia from China PR—Final Findings.

No. 18/1/1997-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof.

A. PROCEDURE:

2. The procedure described below has been followed with regard to the investigations:-

- (i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), notified Final Findings vide Notification No. 18/1/97-ADD dated 2nd February, 1999 recommending imposition of anti-dumping duties on all imports of Fused Magnesia (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as subject country).
- (ii) The Custom Tariff Amendment Act, 1995 and the Rules made thereunder require the Authority to review from time to time the need for the continued imposition of definitive anti-dumping duties imposed by the Central Government.

iii) The Hon'ble Supreme Court vide its Order dated 5.3.2003 in Civil appeal No. 4936-4937 of 2000 has directed the Authority to assess the following inter-alia:

- a) Whether the closure of the factory of Birla Periclase (which was manufacturing sintered magnesia) was a result of the dumping carried out by Chinese exporters of Fused Magnesia or not and whether the closure was subsequent to the investigation or prior thereto;
- b) Whether in the facts & circumstances of the case the continuation of the anti-dumping duty is justified.
- c) To complete the review within three months of receipt of the Hon'ble Supreme Court Order.

iv) The brief history after the Notification of the Final Findings is reproduced below for the sake of easy reference:

- a) M/s. Birla Periclase filed an appeal on 3rd May, 1999 before CEGAT for enhancement of anti-dumping duty.
- b) M/s. Indian Refractory Makers' Association filed an appeal before the CEGAT on the issue of like Article praying that the product Sea Water Magnesia (Imported from China) is not produced by the domestic industry.
- c) CEGAT decided both appeals on 19.1.2000 and reversed the findings of the Designated Authority.

- d) An appeal was filed by the authority in the Hon'ble Supreme Court on 27.3.2000 against the Order of the CEGAT.
- e) M/s. Associated Ceramacis Ltd and M/s. Maithan Ceramacis Ltd. filed Intervention Application requesting for direction of the Supreme Court to Customs Authorities to release and clear the goods without imposing anti-dumping duty.
- f) Department of Revenue filed an Intervention Application before the Hon'ble Supreme Court as to why CEGAT Order regarding withdrawal of anti-dumping duty can not be implemented.
- g) Hon'ble Supreme Court on 12th May, 2000 admitted the appeal and stayed refund of duties already collected.
- h) A number of petitions were filed before the High Courts of Orissa and Andhra Pradesh stating that Hon'ble Supreme Court has only stayed the refund of anti-dumping duty already collected but does not stay the order of CEGAT setting aside the order of Department of Revenue imposing duty.
- i) Disposing of various Intervention Applications, Hon'ble Supreme Court passed an order on 10.5.2001 that "Pending hearing of the appeals, the goods will be cleared on a bond being furnished to the satisfaction of the Department of Revenue in so far as anti-dumping duty is concerned. In respect of those goods that have been imported subsequent to the order of the CEGAT and anti-dumping duty paid, the same shall be refunded to the importers within four weeks subject to the importers executing a similar bond".

- j) Hon'ble Supreme Court vide its order dated 05.03.2003 set aside the impugned order of the CEGAT and decided the appeals.
- k) Hon'ble Supreme Court directed the Designated Authority to :
- 1) consider the factual position and assess whether the closure of the factory of M/s. Birla Periclase (which was manufacturing Sintered Magnesia) was a result of the dumping carried out by the Chinese exporters of fused magnesia or not and whether the closure was subsequent to the investigation or prior thereto.
 - 2) consider whether in the facts and circumstances of the case, the continuation of anti-dumping duty is justified. Depending upon its view in the matter, the Designated Authority may consider whether levy of the anti-dumping duty should be reviewed and, if so, from what date.
 - 3) consider the entire matter including whether the duty can be withdrawn for any period from February 2, 1999 i.e. the date of the final findings of the Designated Authority.
 - 4) complete the Review after affording a hearing to all the interested parties within a period of three months from the receipt of this order, provided all the parties cooperate. If any party chooses not to appear, the Designated Authority will proceed in the absence of such party.

- 5) Pending such a review, the existing arrangement of importing fused magnesia on the basis of duly executed bonds shall continue. In the event, the Designated Authority concludes that the levy of anti-dumping duty is justified for any period, the bonds shall be duly honoured by the importers who have executed the same. Duties, if any, collected shall abide by the result of such a Review in accordance with law.
- v) Having directed to review the Final Findings made vide Notification 18/1/97-ADD dated 2.2.1999, the Authority initiated review vide Notification No. 18/1/97-DGAD dated 24.3.2003 to review the need for continued imposition of anti-dumping duty on Fused Magnesia from China PR in accordance with the Customs Tariff (Amendment) Act, 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995.
- vi) The Authority initiated the review of anti-dumping duty imposed on Fused Magnesia on the subject country vide Notification No.18/1/97 on 24.03.2003 and requested the interested parties to furnish their views in writing not later than 30 days from the date of the publication of the mid term Review Notification.
- vii) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 30th April, 2003. All parties were requested to file written submissions of the views expressed orally.
- viii) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted and arguments made by various interested parties.

- viii) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted and arguments made by various interested parties.
- ix) The arguments raised by the interested parties have been appropriately dealt with in these findings.
- x) In accordance with Rule 16 supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same have been duly considered in these findings.
- xi) The period of investigation has been taken from 1.1.2002 to 31.12.2002.

B. VIEWS ON BEHALF OF THE ERSTWHILE DOMESTIC INDUSTRY, EXPORTERS, IMPORTERS, USERS, ASSOCIATIONS AND OTHER INTERESTED PARTIES & EXAMINATION BY THE AUTHORITY.

3. The arguments raised by the interested parties have been examined, considered and, wherever appropriate, dealt in a precise manner in the relevant paras herein below. The following parties have given their submissions:
- i) M/s Indian Refractory Makers association, Kolkata and by their lawyers.
 - ii) M/s Tata Refractories Ltd, P.O. Belpahar.
 - iii) M/s OCL India Ltd, P.O. Rajgangpur

- iv) M/s Associated Ceramics Ltd, P.O.Chirkunda
- v) M/s Maithan Ceramic ltd,P.O. Chirkunda
- vi) M/s Bharat Refractories Ltd ,Bokaro
- vii) ~~Lawyer on behalf of~~ M/s Birla Periclase

In addition to the above, M/s Lloyds Steel Ind. Ltd. and M/s Sarvesh Refractory Pvt Ltd. also submitted their views in a letter.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

4. Product under consideration in the present investigations is Fused Magnesia. Fused Magnesia is a magnesia used as a refractory material primarily in steel production. Magnesia is available from natural sources (e.g. fused magnesia) as well as synthetic sources (e.g. sea water magnesia). Magnesia available from either of the two sources can be sintered to get sintered magnesia (like sea water magnesia) or fused to get fused magnesia. Fused magnesia is produced in various grades, generally classified in terms of its chemical properties (such as MgO, CaO, SiO₂, Al₂O₃, Fe₂O₃, B₂O₃) and physical properties (such as bulk density, crystal size, tyre porosity). The subject Fused Magnesia is classified under chapter custom sub-heading 2519.90 of Schedule 1 of the Customs Tariff Act, 1975 and under 2519.90.01 and 2519.90.03 of international Trade Classification. The classification is, however, indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

4.1 Submissions by the erstwhile Domestic Industry:

There have been no submissions in this regard by the erstwhile Domestic industry.

4.2 Submissions by the Exporters:

There have been no submissions in this regard by the exporters.

4.3 Submissions by the Importers, Users and Associations:

a) Natural Fused Magnesia is produced by electro-fusion in an electric arc furnace of naturally occurring magnesite mined from the earth, whereas sintered sea water magnesia, as previously produced by M/s. Birla Periclase, is by a process of synthesis of the magnesia content in sea water (often not more than 3-4% by weight) through chemical reaction, precipitation, drying and sintering of the residue in shaft or rotary kilns. The process of production of the two is therefore significantly different and gives rise to different properties.

b) Although both fused magnesia and sintered sea water magnesia are both supplied in the form of peas or pellets (of a size usually of about 15-20 mm) these are then crushed and ground to small sizes below 1 mm, 1-2 mm, 2-3 mm and so on, according to the nature and quality of the refractory product to be manufactured. However, the chemical and physical characteristics of natural fused magnesia and sintered sea water magnesia differ materially so as to affect the quality and performance of the refractories produced from them. The major differences in characteristics as already given in our previous application and annexures there are shown below:

Characteristic	Natural fused Magnesia (typical)	Sintered sea water Magnesia (as of Premier Periclase)	Sintered Sea Water Magnesia of Birla Periclase
M _g O (% by wt)	97	97.2	96.9
SiO ₂ (% by wt)	1.9	0.25	0.44
CaO (% by wt)	1.0	2.1	2.37
Al ₂ O ₃ (% by wt.)	--	0.7	0.11
FeO (% by wt.)	--	0.2	0.17
B ₂ O ₃ (% by wt)	--	0.01	0.02
Bulk Density (gm/cc)	3.45	3.40	3.38
Crystal Size	Aver. 450	120	100

It was stated at the Hearing that the B₂O₃ content in the sea water magnesia has an adverse effect on refractories performance. On the other hand higher crystal size of fused magnesia has a material effect in resistance to slag in the steel making. It was, therefore, stated at the Hearing that the new refractory formulations using fused magnesia as the raw material in place of sea water magnesia had led to significant increase in performance of the refractories, from about 350 heats in early 90's to 1000-1200 heats by 1999-2000 (an even higher currently). This increased life (without any notable addition to steel making capacity in the last 5 years) led to a drastic reduction in requirements of magnesia carbon refractories by the Steel Industry over the last decade.

- c) The principal use of the imported fused magnesia is in manufacture of magnesia carbon bricks for application in LD Convertors of Steel plants. Sintered sea water magnesia on the other hand is used for manufacture of burnt magnesite and mag-chrome bricks for use in EAF, cement rotary kilns, copper smelters, etc.

- d) Fused natural magnesia and sintered sea water magnesia are not like products which are interchangeable in since the refractories industry has been importing both items since the early 1990's much before M/s. Birla Periclase was set up and commenced trial production in early 1998. Fused Magnesia and sea water magnesia are not freely substitutable for particular applications and performance levels as required by the steel industry.
- e) Owing to changing steel making technology, operating conditions and performance guarantees stipulated by the steel industry, the refractory manufacturers have had to develop new formulation of products based on fused magnesia (as against sea water magnesia) because of higher bulk density, nil contents of B₂O₃ and much higher crystal size.
- f) In the application dated 12th March, 1997 by M/s. Birla Periclase seeking imposition of anti-dumping duty it has been stated that the specification of sintered magnesia shall have the following characteristics MgO – 97.5% min, CaO – 1.8% max, SiO₂ – 0.35% max, R₂O₃ – 0.03% max, B₂O₃ – 0.25% max. However, it is learnt that in the material actually supplied by M/s. Birla Periclase to various refractory Manufacturers the specifications have been found to be MgO – 97.00% CaO – 2.10%, SiO₂ – 0.35%, Fe₂O₃ – 0.18%, Al₂O₃ – 0.12%, B₂O₃ – 0.025%. These vary substantially in the specification of sintered sea water magnesia as given by M/s. Birla Periclase and

also from fused magnesia imported from China in that this as nil B₂O₃ and Bulk density 3.45 GMCC (as against M/s. Birla Periclase product of 3.40 GMCC) and Crystal size of more than 300 microns (compared with M/s. Birla Periclase product Crystal size of 100 microns).

- g) The subject goods produced by the domestic industry and imported from China PR do not closely resemble in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, functions and uses, product specifications, pricing, distribution and marketing and tariff classification of the goods. Chinese fused magnesia is substantially different from fused magnesia produced in countries like Japan, Israel, Canada, Australia etc. Each product is used in specific application area and one type of brick can not replace other type. Fused magnesia and sea water magnesia are different in terms of these properties. The two are not commercially interchangeable. The two are technically and commercially substitutable. The Indian consumers have used the two interchangeably.

D. DOMESTIC INDUSTRY

5. Submissions by the erstwhile Domestic Industry:

- a) M/s. Birla Periclase, a unit of Indian Rayon Industries had planned to set up a unit at Vizagapatnam, Andhra Pradesh for the manufacture of 50,000 MT of Sea Water Magnesia in 1996. The mechanical commissioning was completed in 1997. The market for sea water magnesia, an import substitution product, was around 40,000 – 50,000 mt.

- b) M/s. Birla Periclase commissioned its plant and started commercial production in February, 1998. The quality of the product was upto international standards and the user industries – local refractory manufacturers/steel plants – used this material to their satisfaction. During this period, it was found that the imports into India of Chinese Fused Magnesia, a like product to Sea Water Magnesia, increased substantially from only 2000 MT in early 1990's to over 25,000 MT by 1995-96. From a detailed analysis of the market price and production costs in China of Fused Magnesia, Birla Periclase came to the conclusion that the Fused Magnesia is being dumped into Indian market at cheaper prices. This it feared will kill the sea water Magnesia industry in its nascent stage of development. Accordingly, an anti-dumping application was filed in 1997.
- c) The anti-dumping investigation was initiated but no provisional measures were imposed. The Designated Authority finally recommended anti-dumping duty on Fused Magnesia, after a lapse of 15 months, in February, 1999 and the quantum was too meagre. During this interregnum the increased imports of cheaper dumped Fused Magnesia affected the consumption of like product sea water Magnesia. Being a continuous process plant, Birla Periclase accumulated lot of finished good stocks and had to review its operations towards end of 1998. After an assessment, it took the decision to suspend operations in December, 1998 as operating below optimum capacity increased the cost of production and the stock position added to the problem of storage, working capital and financial loss. The unit was carrying large inventory of over 6000 mt at the time of suspension of operations.

- d) In September, 1999 the management came to the conclusion that at the level of imports of Fused Magnesia and with the meagre anti-dumping duty, it was not viable to run the plant. The shareholders after review took the decision to close down the plant and sell off its assets. An investment of about Rs. 350 crore was rendered infructuous.

5.1 **Submissions by the Exporters:**

There have been no submissions in this regard by the exporters.

5.2 **Submissions by the Importers, Users and Associations:**

- a) M/s. Birla Periclase commenced trial production of sea water magnesia in the early part of 1998. They however suspended production by December 1998 because of changing technological and performance requirements in the steel industry, inferior quality of their products and consequent rejections, overall economic depression, etc. Despite the Anti-dumping duty being in force since March 1999, the management of Birla Periclase took a strategic decision in mid 1999 to close down the sea water magnesia business as it fell outside their core interests. This was reported in The Telegraph Newspaper dated 11.4.1999 and subsequently in other newspapers such as Business Standard, Business Line (The Hindu) and Economic Times. It is notable that despite filing an Appeal before CEGAT about the anti-dumping duty, Birla Periclase did not pursue the matter. They had also auctioned off their plant and machinery as advertised in Economic Times

on 27.10.1999 which was before the CEGAT gave its judgement in January, 2000. Birla Periclase also officially confirmed that they were exiting from the sea water magnesia business as a part of strategic decision and restructuring as per their letter dated 20.4.2001 to the Association. Thus there is no domestic industry in this respect in existence since mid 1999 and the anti-dumping duty on fused magnesia has served no purpose as envisaged in law.

- b) The Customs Notification No. 35/99 dated 17th March, 1999 was issued imposing Anti-dumping duty on importing Fused Magnesia from China. Shortly after this, on 11/4/99, Mr. Kumar Mangalam Birla is quoted in the Telegraph Newspaper "the group will focus on Cement, Aluminium, Carbon black, Fertilizer, Energy and Financial Service". The Newspaper added that recently they had shut down the Sea Water Magnesia unit of Indian Rayon. The Business Standard Smart Investor Magazine dated 23.9.1999 reported that as part of the restructuring, Indian Rayon will dispose of its Sea Water Magnesia Unit. The report adds that the unit, which was set up at a cost of Rs. 341 crores, was unviable since the commissioning because of cost overruns. Again reports appeared in the Hindu Business Line and the Economic Times, both dated 2.10.1999, that the Board of Directors of the Indian Rayon decided to dispose of the asset of the Sea Water Business as it was found unviable after examining various options. Subsequently in the Economic Times dated 27.10.1999 and 16.2.2000 there were advertisements for disposal of pumps, filters, chlorination plants, etc for the Sea Water Magnesia Plant of Birla Periclase.

- c) According to the newspaper reports, the closure of the factory of Birla Periclase was because of cost overruns and consequent non-viable nature of the unit and not due to the alleged dumping of Fused Magnesia. The closure was sometimes in the middle of 1999, subsequent to the investigation and the imposition of the Anti-Dumping Duty in March, 1999. The plant also failed because of the inherent technical contradiction in its position that sintered Sea Water Magnesia is substitutable by Fused Magnesia, as pointed out above.

E. PERIOD OF INVESTIGATION:

6. Submissions by the Importers, Users and Associations:

- a) According to the Gazette Notification dated 24.3.2003, the period of investigation in this case will be from 1.1.2002 to 31.12.2002. It is submitted that in the face of it this does not seem to be in conformity with the Hon'ble Supreme Court's order dated 5.3.2003 passed in Civil Appellate No. 4936-37 of 2002 wherein on page 2 the Hon'ble Court directed that the Designated Authority may consider the entire matter including whether the duty can be withdrawn for any period from 2nd February, 1999 (when the final findings of the Designated Authority were notified). Therefore, the period of investigation should cover the period from 2nd February, 1999 onwards.

F. INJURY AND CAUSAL LINK**Submissions by the Association(IRMA):**

7. a) The import of Fused Magnesia has no causal link with the problems faced by M/s. Birla Periclase. The Indian refractories industry imported Fused Magnesia from other countries, prior to the initiation of investigation, in the course of the investigation and even after the imposition of anti-dumping duty, and continues to do so today. Not only that, several importers also indented on more than one occasion for Sea Water Magnesia from Birla Periclase, but the quality was lower than indicated or there were rejections on grounds of quality.
- b) The imports of Fused natural Magnesia and sintered Sea Water Magnesia were made purely on technical considerations keeping in mind the changing steel making practices in India, and the need to offer cost-effective refractories to the Indian Steel Industry in the era of economic liberalisation.
- c) Thus the sequence of events bears out that injury as alleged by M/s. Birla Periclase in their petition dated 17.3.1997 could not have arisen because of the import of Fused Magnesia. Moreover, Birla Periclase closed because of strategic business decision, in spite of imposition of anti-dumping duty in March 1999 by Government.

G. ALLEGED DUMPING:

Submissions by the association (IRMA):

- 8 a) As already submitted by IRMA before the CEGAT, the domestic sale price of Fused Natural Magnesia within China was RMB 1650/1850 per MT (corresponding US \$ 190/210 per MT) The CIF price of the Fused Magnesia from China into India was at US \$ 260/290 per MT. This also compared favourably with the prices quoted for same product by China but exported to countries like USA, Japan etc. The price of Fused Magnesia from Israel as mentioned by M/s. Birla Periclase in their application relates to the product Fused high purity Sea Water Magnesia which sells at US \$ 1000 per mt which is different from Chinese Fused Magnesia. Thus the allegation of Dumping had no basis or relevance.
- b) It is further pointed out that the CIF Price of Fused Magnesia supplied by China is not lower than their cost of production, is borne out from the fact that the price charged from 1998 has been consistently reduced.

H. In Response to Disclosure Statement**9. Submissions by the erstwhile domestic Industry.**

There have been no submissions.

9.1 Submissions by the exporters.

There have been no submissions.

9.2 Submissions by Importers, Users and Association

1. M/s. Tata Refractories Ltd.

- a) The Chinese manufacturers have been pricing their product based on their economy of scale and market demand. China alone produces almost 90% of the world's total Fused Magnesia. It is further pointed out that the export price from China PR in respect of Fused Magnesia has been gradually reduced over the years. It is further pointed out that no other country in the world other than India has imposed anti-dumping duty on Fused Magnesia originating in and exported from China.
- b) From the foregoing, it is clear that closure of M/s. Birla Periclase is due to the other factors, such as severe depression in Steel Industry from 1997-98 to 20001, the changes in steel making process with greater use of LD process and continuous castings, changes in operational parameter like new design of oxygen lances and slug splashing resulting in increase of refractory lining life from 350 heats to more than 1000 heats. Therefore, the market conditions severely affected domestic refractories industries and in turn affected the business of Birla Periclase, but not due to any dumping carried out by the Chinese exporters.
- c) Period of Investigation should be from 02.02.1999 and not from 01.01.2002 to 31.12.2002

2. M/s OCL India Ltd

- a) The observations of the Hon'ble Supreme court does not permit drawing the conclusion as drawn by the designated authority that the Hon'ble Supreme court has upheld the findings of the Designated Authority as regards the Product under consideration and like article.

3. M/s Indian Refractory Makers Association.

- a) Considering the various dates and keeping in view the directions of the Hon'ble Supreme Court, the period of review should cover the period from 2nd February, 1999 onwards.
- b) In respect of Product under consideration and like article, it is not immediately clear whether the setting aside of the order of the CEGAT dated 19.01.2000 ipso facto should lead the Designated Authority to the conclusion that fused magnesia and sea water magnesia are like products as provided in the Anti-dumping Rules, 1995. Since the Designated Authority is to review the entire matter (including whether the duty can be withdrawn for any period from 2nd February, 1999), the Association submits that the facts and arguments concerning "Like Article" given in our Review Petition dated 23rd April, 2003 and in the Written Statement on oral submissions dated 7th May, 2003 may be duly taken into account by the Designated Authority in deciding this matter.

- (c) In respect of Domestic Industry, as submitted in the Review Petition and in the Written Statement thereafter, Birla Periclase failed to maintain the adequate supplies. There were rejections on grounds of inferior quality, as per documents already furnished. On these considerations, Birla Periclase does not measure up to be the domestic industry.
- (d) The Disclosure Statement mentions that the Designated Authority notes that the decision leading to closure of the sea water magnesia business was as a result of other factors as well as that of dumping of fused magnesia (as alleged by M/s. Birla Periclase). This issue is directly connected to the aspect of "Causal Link" as provided in the Anti-dumping Rules, 1995. There were a number of adverse market factors in 1997-98 and 1998-99 such as (i) incorrect estimate of the market by M/s. Birla Periclase at 40,000 – 50,000 tones into India when the total import of all types and qualities of magnesia raw materials was 57,000 m.t. in 1997-98, falling to 42,000 m.t. in 1998-99; (ii) inadequate market understanding by Birla Periclase as to the significance of Boron (B_2O_3) and of crystal size (450 microns in Fused Magnesia relative to 80-100 microns in Sea Water Magnesia manufactured by Birla Periclase); (iii) operational and technological changes in the steel industry resulting in higher refractory lining life from 350 heats to over 1000 heats; (iv) severe slump amongst the integrated steel plants with production falling from 16.56 million tones in 1996-97 to 15.80 million tons in 1997-98 (source : Monthly Steel Statistics, Joint Plant Committee). The

Association would, therefore, emphasize that any one of these factors was important enough to have lead to the losses incurred by Birla Pericalse, leading to its closure. It is further substantiated by the fact that Birla Pericalse decided to close its plant shortly after imposition of anti-dumping duty in March, 1999 and also did not press its appeal before the CEGAT during 1999-2000.

- (e) In respect of the issue of continuation of Duty and Review whether duty can be withdrawn for any period from 2/2/1999 – Considering that (i) there are marked differences in chemical and physical characteristics between sea water magnesia and fused magnesia as previously shown, (ii) Birla Pericalse closed its plant since mid-1999 and sold off its plant and machinery at a net surplus of Rs. 8.91 crores (iii) this closure was due to imperfect market understanding by M/s. Birla Pericalse and (iv) that Birla Pericalse closure of the plant took place after the imposition of anti-dumping duty (recommended in February, 1999 and levied from March, 1999) the Association submits that continuation of the anti-dumping duty on import of fused magnesia from China is not serving the purpose as envisaged in the Anti-dumping Rules, 1995. The anti-dumping duty is not called for at all and should, therefore, be withdrawn with effect from 02.02.1999.

I. EXAMINATION BY THE AUTHORITY:**10 i) Product under consideration and like Article:**

The Authority notes that the Hon'ble Supreme Court set aside the impugned order of CEGAT dated 19.1.2000 stating that "Parties are agreed that no reasons be recorded for setting aside the impugned order". It has been pointed out that the above observations of the Hon'ble Supreme Court do not permit drawing the conclusion that the Hon'ble Supreme Court has upheld the findings of the Designated Authority as regards the product under consideration and like article. The Authority observes that the Hon'ble Supreme Court has preferred not to go into the merits of this controversy rather has directed the authority to consider the factual position. The fact that the Hon'ble Supreme Court has not given any directions on the final findings of the Designated Authority as regards the product under consideration and like article, the Authority reiterate its Final Findings in respect of product under consideration and like article.

ii) Domestic Industry:

a) The Authority notes that as reported in the Auditors' Report of M/s Birla Periclase Ltd., it has been mentioned that due to severe adverse market conditions, the company has decided to stop the operations and exit from Sea Water Magnesia business from 1st October, 1999. The balance sheet for the year ending 31.3.2000 shows a production of 10619 MT of Sea Water Magnesia upto and for the year ending 31.3.1999 and Nil production for the year ending 31.3.2000.

b) As per the copy of the Board's Resolution dated 22.7.1999 of M/s Birla Periclase submitted, it states that "that the Board was apprised from time to time about the adverse working of Sea Water Magnesia Plant situated at Vishakapatnam. The Board was again informed that the metrics based on which the company undertook to implement the Sea Water Magnesia Project about four years back has since undergone a complete change viz., when the company conceived this project, it was that the international prices of Sea Water Magnesia will atleast be maintained but the prices fell from US\$ 475 per ton to an unexpected and unbelievably low level of US\$ 325 per ton mainly on account of China dumping Fused Magnesia in large quantity and the user industry of Sea Water Magnesia i.e. Steel and Refractory industry facing unprecedented down trend.

The Board was further informed that due to above situation there are losses even at PBIDT level and as such no part of interest can be recovered and no such coverage seems to be possible even in foreseeable future. As such the operation of this plant has been temporarily suspended since 23rd December, 1998 on account of severe adverse market conditions resulting in poor off take and heavy accumulation of stocks.

The Board was further informed that options to transfer/to sell/to hive off/to dispose of the plant on a going concern basis are being explored

c) The balance sheet of M/s Indian Rayon & Industries Ltd for the year ending 31.3.2002 reports in Schedule 18.8 that the Board had decided to exit the Sea Water Magnesia business in the accounting year 1999-2000 and accordingly the unsold assets as on 31.3.2000 were brought down to their realizable value.

d) A letter dated 30th April, 2001 written by the Executive President of M/s. Birla Periclase to Indian Refractory Makers' Association notes that "as a part of strategic decision and restructuring, the group has decided to exit from the Sea Water Magnesia Business".

e) The Authority notes that the operations at the plant were temporarily suspended with effect from 23rd December, 1998. As the Financial Report of the year 1999-2000 indicates Nil Production from April, 1999 onwards, it is presumed that the production remained suspended with effect from 23rd December, 1998. In line with the directions of the Hon'ble Supreme Court, the authority notes that the decision of temporarily suspending the production was taken before the final findings of the authority. However, the decision of closure of the unit was taken by the company vide its board meeting dated 22.07.1999. As per the statement of account for the period ending 31.03.2000, the auditors report states that the company has decided to stop the operations of the division and exit from its sea water magnesia business on 01.10.1999.

f) The assessment whether the factory was closed as a result of the dumping carried out by the Chinese Exporters of Fused Magnesia needs to be examined in light of recordings of the proceedings of the company in various documents. As per the board resolution dated 22.07.1999, the company envisaged that the international prices of sea water magnesia will atleast be maintained but the prices fell to an unexpected and unbelievably low level mainly on account of china dumping Fused magnesia in large quantities and the user industry of sea water magnesia facing unprecedented down trend. The letter dated 30.04.2001 from the company to M/s Indian Refractory mfgs however states that as a part of strategic decision and restructuring, the group has decided to exit from the sea water magnesia business.

- g) The authority therefore notes that the decision leading to the closure of this business activity was a result of other factors as well as that of Chinese dumping of the product.
- h) The Authority further notes that assuming that the industry was closed down because of the continued dumping, the domestic industry has not expressed its opinion or intention to revive its business. As reported in Annual Report for year 2001-2002, the company brought down its unsold assets as on 31.3.2000 to its realizable value. During the year, the Company had signed a memorandum of understanding for disposal of land and other infrastructure facilities during the year. The disposal process has since been completed and sale proceeds realised. The unsold assets as on 31st March, 2002 were revalued at the year end at their realisable values. As disposal process has been completed substantially, the net surplus of Rs. 8.91 crores has been credited to Profit and Loss Account and disclosed as an exceptional item,
- i) In view of the above, the authority notes that the closure of the factory of M/S Birla Periclase was due to other factors as well as due to the dumping carried out by the Chinese exporters of fused magnesia.
- iii) Continuation of the duty and review whether the duty can be withdrawn for any period from .02.02.1999.

- a) The authority notes that Hon'ble Supreme Court while passing its order has observed the limited power of review available under Rule 23 with the Authority. The Hon'ble Court has observed that "our attention has been drawn to Rule 23, which provides for a limited power of review for the purpose of continuing with the anti-dumping duty but confers no power for retrospectively withdrawing the same". The Hon'ble Supreme Court has, however, graciously directed the Authority to consider the entire matter including whether the duty can be withdrawn for any period from February 2, 1999 i.e. the date of the Final Findings of the Designated Authority. It has also been observed by the Hon'ble Supreme Court that this Order is passed in the peculiar facts of this case with a clear understanding that the same should not be cited as a precedent in other cases.
- b) In light of the above, the Authority has reviewed the entire matter. It is noted from the available records that the Company temporarily suspended its operation from 23rd December, 1998. The Authority, however, came out with its Final Findings recommending Anti-dumping duty as till that time the Company has not shown any intention to transfer/to sell/to hive off/to stop the production or to dispose of the plant and machinery. As required under the statute, the Authority went ahead with its Final Findings to provide sought relief to the domestic industry. The Authority filed an appeal in the

Hon'ble Supreme Court on 27.3.2000 against the order of the CEGAT dated 19.1.2000 reversing the findings of the Designated Authority. The grounds of appeal were primarily based on the observations (purported to be contradictory) relating to the issue of Like Articles.

- iv) a) The Authority notes that the Company decided to stop the operation of the Division and exit from its Sea Water Magnesia Business from 1st October, 1999. In the views of the authority, this becomes the most rational date for withdrawal of anti-dumping duty as after this date, the domestic industry ceases to exist. The Authority has not come across any evidence or submissions made by the domestic industry or any other interested party indicating their intention for production of the product under consideration.
- b) The Authority, therefore, holds that the domestic industry ceased to exist with effect from 1st October, 1999. Further, in line with the powers to review the retrospective withdrawal of duty graciously granted by the Hon'ble Supreme Court, the Authority recommends retrospective withdrawal of anti-dumping duty on Fused Magnesia with effect from 1.10.1999 onwards.

J. CONCLUSIONS:

11. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusions that :

- (i) the decision leading to the closure of factory of M/s. Birla Periclase (which was manufacturing “sintered magnesia”) was a result of other factors as well as that of Chinese dumping of the product.
- (ii) Under the facts and circumstances of the case, the continuation of anti-dumping duty is not justified and the Authority recommends accordingly.
- (iii) After careful consideration of the entire matter, the Authority recommends retrospective withdrawal of the anti-dumping duty on “Fused Magnesia” with effect from 01.10.1999.

L. V. SAPTHARISHI, Designated Authority